सिमटते खेत, सहमे किसान

भारत डोगरा

यह आधुनिक विकास की एक बड़ी विसंगति है कि तमाम तरह की बढ़ती चमक-दमक और वैभव के बीच मनुष्य की खाद्य सम्बंधी सबसे बड़ी ज़रूरत की दीर्घकालीन उपलब्धि का संकट बढ़ता जा रहा है। वर्तमान में यह संकट भारत सहित विश्व के अधिकांश देशों में खाद्य उत्पादों की बढ़ती कीमतों और सोमालिया जैसे कुछ देशों में अकाल के रूप में सामने आ रहा है।

हाल के अनेक वर्षों में विश्व में खाद्यान्न के भंडार काफी कम हुए हैं, और ज़रूरतमंद देशों को सहायता पहुंचाने में कठिनाई आई है। विभिन्न कारणों से भविष्य में यह खाद्य संकट और गंभीर होने की आशंका है।

इसकी एक बड़ी वजह जो भारत में और विश्व स्तर पर भी स्पष्ट नज़र आ रही है वह यह है कि बड़ी तेज़ी से उपजाऊ कृषि भूमि गैर-कृषि कार्यों के लिए उपयोग की जा रही हैं। यह भूमि सदा के लिए कृषि हेतु अनुपलब्ध हो जाती है। इस तरह खाद्य उत्पादन का आधार सिमटता जा रहा है। इतना ही नहीं, उपजाऊ कृषि भूमि की गुणवत्ता का ह्रास भी अधिकांश स्थानों पर तेज़ी से हो रहा है।

इसका सबसे बड़ा कारण रासायनिक खाद व कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग है। इसके अलावा, मिट्टी के अधिक कटाव, बीहड़ बनने, दलदलीकरण व लवणीकरण आदि के कारण भी उपजाऊ कृषि भूमि नष्ट हो रही है या उसकी उत्पादकता तेज़ी से घट रही है।

रासायनिक खाद व खतरनाक दवाओं के अत्यधिक उपयोग या अन्य तरह के पर्यावरणीय विनाश से खेती के मित्र कीट-पतंगों व पक्षियों की संख्या में कमी आ रही है। खेती के सबसे बड़े मित्र केचुएं व मिट्टी में पाए जाने वाले अनेक सूक्ष्म जीव हैं जो मिट्टी का भुरभुरापन, पानी संग्रह की क्षमता, सजीवता व उपजाऊपन बनाए रखते हैं। इनकी संख्या न केवल बहुत कम हुई है अपितु अनेक वर्षों तक ज़हरीली दवाओं व रासायनिक खाद के अंधाधुंध उपयोग के बाद अनेक खेतों की मिट्टी से तो वे लुप्त ही हो गए हैं। तितली, भंवरे, मधुमक्खियों जैसे मित्र कीट-पतंगों की परागण में महत्त्वपूर्ण भूमिका है और इनकी संख्या में बहुत कमी आई है।

कृषि का आधार जल व नमी है पर कई कृषि क्षेत्रों में अधिक दोहन व कम संरक्षण के कारण जल स्तर नीचे चला गया है। नदियां, तालाब, झरने सिमट रहे हैं। चारागाहों व चारेदार वृक्षों में कमी के कारण पशुपालन भी कठिन होता जा रहा है जिससे दूध उत्पादन और जैविक खाद की उपलब्धि पर भी प्रतिकूल असर पड़ रहा है।

प्रमुख खाद्यान्नों की मात्रा ही नहीं गुणवत्ता पर भी प्रतिकूल असर पड़ा है। रासायनिक खाद, कीटनाशकों, खरपतवारनाशकों के अत्यधिक उपयोग से उगाई गई खाद्य फसलें कई स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन रही हैं। मिट्टी में जो पोषक तत्त्वों की कमी आई है वह खाद्य फसलों के पोषण गुणों को भी प्रभावित करती है। भविष्य में उत्पादकता बढ़ाने के लिए जिन जिनेटिक रूप से परिवर्तित (जीएम) फसलों की वकालत अनेक बड़ी व प्रभावशाली कम्पनियां कर रही हैं, उनमें तो स्वास्थ्य के और भी गंभीर खतरे जुड़े हुए हैं।

इसके अतिरिक्त ये जीएम फसलें ऐसा जिनेटिक प्रदूषण फैला सकती हैं जिससे सभी सामान्य फसलों के क्षतिग्रस्त होने की संभावना बनी रहेगी व कुल मिलाकर खाद्य सुरक्षा पर बहुत प्रतिकूल असर पड़ सकता है।

इससे पहले भी जिस तरह परम्परागत बीजों व जैव विविधता की उपेक्षा की गई है, उससे विश्व कृषि व विशेषकर खाद्य फसलों का आधार बहुत सीमित हो गया है तथा एक से जिनेटिक आधार की फसलें बड़े क्षेत्र में फैल गई हैं। इस कारण फसलों की बीमारियों व हानिकारक कीड़ों के प्रकोप के तेज़ी से फैलने की

संभावना बहुत बढ़ गई है।

एक ओर, जहां अच्छी खेती का पर्यावरणीय आधार बहुत कमज़ोर हुआ है, वहीं छोटे किसानों से भूमि छीनने की प्रवृत्ति भी बढ़ी है। छोटे किसानों को सस्ती कृषि तकनीक की ज़रूरत है, पर उन पर ऐसी महंगी तकनीकें, उत्पाद व उपकरण थोपे गए जिससे वे कर्ज़ग्रस्त हो गए और भूमि से हाथ धो बैठे।

विश्व स्तर पर अनेक बड़ी कंपनियों ने बड़े पैमाने पर किसानों से ऐसे अनुबंधों पर काम करवाया है जो किसानों के लिए हानिकारक रहा है। ऐसी कंपनियों ने विशेषकर अफ्रीकी देशों में बहुत बड़े पैमाने पर भूमि हथियाई है जिससे वहां के किसानों व पशुपालकों की आजीविका पर प्रतिकूल असर पड़ा है। दुनिया भर में तमाम परियोजनाओं के लिए किसानों की ज़मीन ले ली गई व इसके बदले ज़मीन नहीं दी गई जिससे किसानों व कृषि दोनों की स्थायी क्षति हुई।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के ऐसे समझौते हुए हैं जिनसे गरीब व विकासशील देशों में सस्ते खाद्य भेजकर तथा उनके बीज अधिकार छीनकर किसानों की तबाही की स्थिति तैयार की जा रही है। दूसरी ओर, विश्व खाद्य व्यवस्था पर चंद बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का दबदबा बढ़ता जा रहा है।

इस कारण विश्व खाद्य व्यापार में मुनाफे व सट्टे की प्रवृत्तियां ज़ोर पकड़ रही हैं। बनावटी कमी उत्पन्न करके कीमतें बढ़ाकर मोटा मुनाफा वसूला जाता है जबकि इस कारण अनेक लोगों के लिए भूख व कुपोषण की समस्या विकट हो जाती है।

ये सारी विसंगतियां ऐसे दौर में हावी हो रही हैं जब वैसे ही जलवायु परिवर्तन के दौर में वर्षा पहले से अधिक अनिश्चित हो रही है व विभिन्न आपदाएं पहले से विकट हो रही हैं। समुद्र का जलस्तर बढ़ने के कारण अनेक उपजाऊ तटीय क्षेत्र जलमग्न होने का खतरा मुंह बनाए खड़ा है। तरह-तरह से जलवायु परिवर्तन का खाद्य उत्पादन पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है।

इस विकट दौर में यह और भी ज़रूरी हो गया है कि खाद्य उत्पादन के आधार को व छोटे किसानों की आजीविका को मज़बूती दी जाए, पर हाल की प्रगति प्रतिकूल दिशा में रही है। इन गंभीर गलतियों को समय पर सुधारना ज़रूरी है। चिंता की बात यह है कि हमारे सामाजिक कार्यकर्ता भी मूलभूत समस्याओं के स्थान पर गरीबी की रेखा व एपीएल-बीपीएल विवादों में ही फंस कर रह गए हैं। खाद्य सुरक्षा को मज़बूत करने के सभी बहुपक्षीय आयामों पर समुचित ध्यान देना ज़रूरी है।

(स्रोत फीचर्स)